पद ३७

(राग: परज, जोगी - ताल: त्रिताल)

दत्ता ब्रह्मचारी रे ब्रह्मचारी। त्रिभुवनांत तुझी फेरी।।ध्रु.।। शेषाचलीं आसन। माहुरगडांत निद्रास्थान।।१।। काशींत स्नान करी। चंदन लावी पंढरपुरीं।।२।। कोल्हापुरीं फिरे झोळी। भोजन करीत पुरीपांचाळीं।।३।। तुळजापुरीं धुई हस्त। मेरूशिखरीं समाधिस्थ।।४।। माणिक सदुरुनाथा। जगव्यापक अत्रीसुता।।५।।